पुस्तक समीक्षा: संचित राजस्थान के धोरों की कहानियां

डा.यश गोयल

हिंदी कथा रचनात्मकता में इन दिनों साहित्य अकादमी द्वारा प्रस्तुत रेतगाथा साहित्य जगत में ऐसा संचयन है जिसमें देश के रेगिस्तानी इलाके के जन जीवन से संबंधित 23 हिंदी कहानियां हैं। संग्रह के चयन और संपादक पल्लव कहते हैं कि हिंदी के विभिन्न संचयनों और संग्रहों के बाद भी इसकी विविधता और विपुलता इतनी कि अनेक दृष्टियों से इसका अध्ययन संभव है। हमारे देश भारत की भौगोलिक और सांस्कृतिक विभिन्न छवियों को हिंदी कहानी ने भी देखने-समझने का प्रयास किया है ।

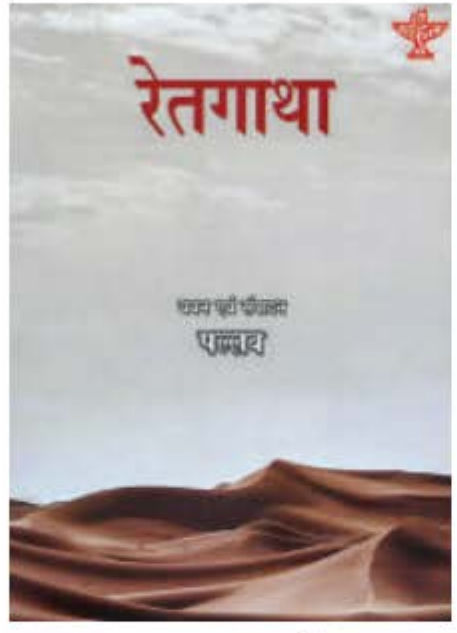

पुस्तक का नामः रेतगाथा
चयन एवं संपादनः पल्लव
प्रकाशकः साहित्य अकादमी, दिल्ली
मूल्यः 230 रु

इन कहानियों में मरुभूमि के लोगों के जीवन संघर्ष, हर्ष, विषाद, देशप्रेम और भौगोलिक विशष्टता के दर्शन होता है। मैदानी, पहाड़ी और तटवर्ती इलाकों से यहां के जीवन की भिन्नता और विशिष्टता इन कहानियों में परिलक्षित होती है, जहां दैनंदिन जीवन के संघर्षों के साथ सीमा संबंधी तनाव और पलायन के दुख सम्मिलित हैं। राजस्थान से जुड़े हिंदी के श्रेष्ठ कथाकारों यादवेंद्र शर्मा चंद,मणि मधुकर, स्वयं प्रकाश,हबीब कैफी,चरण सिंह पथिक,यश गोयल,मालचंद तिवारी,सत्यनारायण और अन्य युवा कथाकारों के साथ-साथ रेत के जीवन संबंधी कहानियों को भी पाठकों को प्रभावित करेंगी। नई पीढ़ी के कथाकारों की कहानियां भी इस संचयन में शामिल की गई हैं जो परिवेश और भूगोल के प्रति उनके नए दृष्टिकोण को बताती हैं।

पल्लव ने इस संकलन में लगभग चार दशकों में फैली हिंदी कहानी का अध्ययन कर मरुभूमि से संबंधित श्रेष्ठ कहानियों का चुनाव किया गया है। श्रेष्ठता इसमें ये है कि कहानियों को महत्व दिया और लेखकों लंबे-लंबे परिचय नहीं दिये गये। कथा संसार में रुचि रखने वाले पाठकों और शोधार्थियों के लिये यह संकलन रेफरेंस साहित्य होगा।

पल्लव ने लगभग हर कहानी की विवेचना अपनी भूमिका में की है जो उसकी महत्ता को दर्शाता है और कथाकार को स्थापित होने का अवसर देता है ।इस संग्रह की कहानियां उस रेगिस्तान के जीवन का एक विहंगम दृश्य बनाती हैं जो देश के मानचित्र को और सुंदर और एक दूसरे साहित्यकार से जोड़ता है ।इस संचयन में पुरानी पीढ़ी के कथाकारों के साथ ही समकालीन और युवा कथाकार भी साथ-साथ हैं।